श्रीमतेभगवतेरामानन्दाचार्य्याय नमः

रसिकसम्राट्श्रीमदग्रदेवाचार्य्याय नमः

श्रीरसिकेन्द्रायैरसमोदलतायै नमः। श्रीप्रीतिलतायै नमः

श्रीमिथिलाकमलाभ्यां नमः। श्रीअवधसरयूभ्यां नमः

सर्वेश्वर्यै श्रीमत्यै चन्द्रकलायै नमः

श्रीअवधसुधानिधियुगलचन्द्रौ बिजयते

श्री अग्र-शतक

दोहा

नमो नमो आचार्य्य वर, अग्र-स्वामि महाराज।
मंगल मूल सुपद-कमल, रसिक-राज सिरताज।।
सर्व अग्र श्रीअग्र भजु, जो चाहत श्री धाम।
जहँ विहरत दोउ लाड़िले, संग सखिन के दाम।।
अग्राचारज नाम जपु, अग्राचारज ध्यान।
अग्रदेव पाथोज-पद, सदा हिये महँ आन।।
अति कराल कलिकाल यह, साधन कछु नहिं होय।
अग्रस्वामि के कृपा बल, मनवांछित फल जोय।।

शरणपाल श्रीअग्र जू, आचारज रस रूप।
अमित जीव उद्धार किय, डूबत भव के कूप।।
अग्रस्वामि रस रीति गहि, वाणी शुभ रस खान।
अग्र दुलारि दुलार लहि, मत भटके मग आन।।
अग्र चरण धरु ध्यान हिय, अग्र नाम रस जान।
अग्रस्वामि की कृपा बिनु, रस शृङ्गार न ज्ञान।।
अग्राचारज नाम जपि, बाढ़ै नित नव रंग।
युगल प्रीति उर जगमगे, युग लीला रस जंग।।
अग्राचारज नाम को, जब लगि जाप न होय।
रहस रीति कहँ पाइये, यह निश्चय जिय जोय।।
अग्रस्वामि पद जोर तू, नातो नेह सुडोर।
सियपिय छवि रस पागि है, जहँ दोउ चन्दचकोर।।
अग्राचारज शरन गहु, तब रस रहस विकास।
रसाचार्य्य की बिनु मया, मिले न युगल विलास।।
अग्राचारज पद कमल, कर मकरन्द सुध्यान।
अवध चन्द्र चन्द्राननी, रहस माधुरी पान।।
अग्राचारज नाम धन, दाता वाणी अग्र।
सब साधन नीरस समुझि, अग्र नाम जपु अग्र।।

अग्रस्वामि रस रीति बिनु, सब रस रीति मलान।
अग्रदेव रस रीति ही युगल रसिक रस मान।।
अग्र सुपद नख प्रभाते, हिय के तिमिर नसाय।
युगलचन्द सिय पीय जू, ध्यान धरत प्रगटाय।।
अग्र नाम जप के सदा, है अधीन रस रूप।
युगल रूप अँखियन बसे, सुमिरत नाम अनूप।।
अग्रस्वामि पद नख प्रभा, अग्र नाम जपि पाय।
नवल लड़ैती लाल जू, भुज भरि भरि लिपटायँ।।
रसिक नरेश सुनाम की, महिमा कही न जाय।
मूक हिये वाचाल करि, पंगु चले मग धाय।।
अग्रस्वामि वाणी विमल, नित्य नेम करि गाय।
युगल केलि रस माधुरी, तबहीं हिय महँ छाय।।
अग्रस्वामि के नाम बिनु, हिय नहिं होय प्रकास।
अग्र नाम जपिये सदा, पाइय रहस विलास।।
अग्राचारजमया बिनु, नवल रसिक रस दूर।
अग्राचारज ध्यान धरि, दृग दोना छवि पूर।।
अग्राचारज पद कमल, सेइ लहो रस भूरि।
रसिकन मृत-संजीवनी, अग्रस्वामि पद धूरि।।

अग्रस्वामि पद धूरि को, सुमिर सुमिर हुलसाय।
जानकि वल्लभ लाल की, लाली हिय महँ छाय।।
अग्रस्वामि के नाम की, महिमा कही न जाय।
जाप करत ही रसिक वर, ता उर जायँ समाय।।
अग्रस्वामि के पद-कमल, ध्यान धरे दिन रात।
युगल केलि की नित नई, होय हिये बरसात।।
अग्रस्वामि की मया सों, हिये होय रस रूप।
अग्रस्वामि को जानिये, सब रसिकन को भूप।।
अग्रस्वामि जप ते फुरै, रस संवाद रस रीति।
नित्य विलास लखावनी, अग्र नाम की प्रीति।।
नव निकुञ्ज नव माधुरी, नवल रसिक सिरमौर।
अग्र नाम जपते लहै, समुझ उपाय न और।।
कर्म वचन मन ते करै, अग्रस्वामि गुन गान।
रहस रीति तबहीं लहै, आन उपाय न जान।।
अग्रस्वामि पदकंज बल, निसिदिन हिय महँ छाय।
श्रीसिय वल्लभलाल की, रहस माधुरी पाय।।
अग्र नाम रस रंग भरि, करि उमंग सो जाप।
मधुकर सम घूमत रहैं, जानकि वर तहँ आप।।

अवध धाम नित रस उदधि, करन चहौ जो पान।
तो श्री अग्राचार्य्य के, चरण हिये महँ आन।।
अग्रस्वामि की वाणि को, रसिक मोदिनी जानि।
पाठ करत हियरस झिले, मिले सजन गहि पानि।।
अग्रस्वामि पद कमल की, आसा राखै चित्त।
या सम और न सुगममग, मिलिहैं सियपिय नित्त।।
अग्रस्वामि पद की प्रभा, जब हिय करै प्रकास।
रसिक रीति तबहीं फुरे, करै खवासी खास।।
रसिक राज सम्राट् शुचि, अग्रस्वामि को रूप।
रसिकाचारज रस उदधि, जपिये नाम अनूप।।
श्री वैष्णव कुल प्रभाकर, अग्रस्वामि को जान।
नव निकुञ्ज नव रस महा, दाता निश्चय मान।।
अग्रस्वामि पद कमल की, जाके हिये महँ टेक।
ताको निश्चय मानिये, निष्कंटक मग एक।।
प्रगट वागसों प्रीति करि, निज कर कमलन सेव।
युगल ललन क्रीडन सुथल, नित रस झाँकी लेव।।
युगल मिलावन हेत में, अली प्रधाना जान।
*मधुराचार्याचार्य्ये सम, अपर भयो को आन।।

* श्री मधुराचार्य के भी रसाचार्य्य श्रीअग्रस्वामी जी के समान दूसरा और कौन हुआ? अर्थात् कोई नहीं।

सिय पिय रास रहस्य की, जाको आसा होय।
ताको आन उपाय नहिं, एक अग्र पद जोय।।
अग्र नाम भव पोत है, अग्र नाम रस कूप।
सुमिरत ही ह्वै जात है, भव निधि गोखुर रूप।।
अग्रस्वामि पद कमल की, छाया जो हिय धार।
ते बहु भवनिधि पोत ह्वै, अमित जीव किय पार।।
अग्रस्वामि की वाणि है, रस मंजूषा यन्त्र।
जानकि-जीवन-जानकी, प्राप्ति करावन मन्त्र।।
परमाचारज जानिये, अग्रस्वामि महराज।
आश्रित पालक रसिकवर, नाम सदा हिय गाज।।
अग्रस्वामि रट लाइये, अग्रस्वामि को ध्यान।
अग्रस्वामि को गर्व हिय, अग्र सुमग निज मान।।
अग्रस्वामि जै जयति जै, जपिये नित भरि भाय।
महिमा अग्र सुनाम की, उमगि-उमगि नित गाय।।
तब श्री अग्र दुलारि जू, मिले तोय भरि अंक।
नित पिय सों इठलाइये, प्रिया पक्ष निःशंक।।
अरस परस चितवत दोउ, रूप भँवर परिजायँ।
अग्र नाम जप की मया, सदा दृगन दरसायँ।।

अग्रस्वामि पद लखि पत्नी, लली लाड़ अधिकाय।
प्यार गंध सिय पाय कै, श्याम भ्रमर मड़राय।।
प्रीतम ललचाये फिरत, प्यारी लाड़ परेख।
अग्रस्वामि पद नेह की, महिमा ऐसी देख।।
अमित जीव जग रस लह्यो, अग्र सु आश्रय पाय।
नाभा आदिक जो भये, जग उद्धार कराय।।
नित्य विहार बहार रस, अग्र नाम जपि पाय।
रसिक मौलिमणि मयाबिनु, नहीं महल प्रविसाय।
अग्रस्वामि की वाणि को, रहस–बोधनी मान।
नमो नमो आचार्य्य वर, रसिकन सर्वस प्रान।।
श्री प्रमोदबन रास रस, दृगन लखावन हार।
अग्रस्वामि आनन्द घन, वार वार बलिहार।।
प्रीति प्रतीती सिय चरण, पाय अग्र पद सेय।
आन उपाय बिहाय के, अग्र चरण गहि लेय।।
अग्रस्वामि वाणी विमल, रसिक मंडनी मान।
असद पंथ खंडन करन, रसिकाचारज जान।।
नवल रँगीले लाल की, नव लीला उर भाय।
अग्र नाम रटना किये, तुरत दृगन दरसाय।।

अग्र नाम जपनो भलो, अग्र सुचरण गुमान।
अग्र स्वामिनी मिलन को, यह मग निश्चय मान।।
अग्र-गामिनी जी भई, युगल मिलावन हेत।
अग्र नाम के जाप फल, अंकमाल दोउ देत।।
अग्रस्वामि के ध्यान को, जो धारे नित नेम।
भव वाधा व्यापै नहीं, ते रह कुशली क्षेम।।
जौं श्री अग्राचार्य्य की, रस सुरीति की चाय।
अग्राचारज नाम जपि, सुरस सिन्धु उमगाय।
अग्रस्वामि की कृपा बिनु, लहै न कोउ रस विन्दु।
अग्रस्वामि की शरण गहि, डूबे रस के सिन्धु।
अग्रस्वामि वाणी विमल, भाव रीति को पोष।
चरण कमल वन्दन किये, हिया होय रस-कोष।।
अग्रस्वामि पथ सुदृढ़ गहि, आन रीति नहि भान।
सो निश्चय सिय चरणलहि, पिय अपनो तेहिमान।।
अग्रस्वामि पद-कंज को, जो निज सर्वस जान।
ताही के हिय में फुरे, बन प्रमोद रस थान।।
साधन करत अनेक विधि, दिन प्रति वर्ष बिताहि।
अग्रस्वामि की मया बिनु, नहिं रस मग परछाहिं।।

अग्रस्वामि की कृपा ते, द्रवें लाडिली लाल।
अग्राचारज नाम जपि, हिये होय रस थाल।।
तीर्थाटन सत कर्म सब, फलत सुकालहिं पाय।
अग्रचरण सुमिरन किये, तुरत प्रीति लहराय।।
अग्रस्वामि पद-कञ्ज भजु, जो चाहो रस धाम।
अरि-भगिनी की का कथा, रिषिहु भयो चहवाम।।
बरसत धाराधर मनहुँ, नाम जाप अस रीति।
ऐसे अग्राचार्य्य के, चरण कमल करु प्रीति।।
अग्राचारज पद कमल, सकल सुखन को सार।
महा महा माधुर्य्य रस, प्रगटे हिये मझार।।
अग्र लाड़िली लाड़िले, अग्रअली उरहार।
चरण कमल वन्दन सुब्रत, भेटे भरि अँकवार।।
नवल लडैती लाल की, नव लीला नवरंग।
अग्र पदाम्वुज वन्दि के, पावै सदा अभंग।।
करुणा सागर कृपा निधि, अग्र चरण उर आन।
जानकि रसिक सुजानकी, रस लीला करु पान।।
अग्रअली की अग्रजा, रघुनन्दन की प्रान।
अग्र नाम जपते मिलें, आन उपाय न मान।।

अवध धाम नित रस उदधि, करन चहै जो पान।
तो श्री अग्राचार्य्य के, चरण कमल बल आन।।
अग्रस्वामि अरविन्द पद, मन मलिन्द करि लेहु।
जानकि जान सुजान के, पावन को मग एहु।।
नित्य अखण्ड विहार रस, जानकि वल्लभ लाल।
अग्र नाम की जप मया, पावै होय निहाल।।
अति उदार श्री अग्र पद, सेइ न पायो काह।
सुमिरत ही भव रुज मिटे, द्रवित होयँ सिय नाह।।
जो सिय पद सेवन चहौ, करो अग्र पद प्रीति।
नित नव लीला रंग को, पावन की यह रीति।।
युग रस रँग की वर्धिका, अग्रअली रस खान।
दोउन उर उमगावती, बीन मधुर स्वर ठान।।
अवध गली रँग रस थली, जहँ विहरत सियलाल।
अग्रस्वामि के नाम बल, करि राखौ उर माल।।
सत चित आनँद रूप है, अवधपुरी निज धाम।
अग्रनाम जपते मिलें, करि दुलार सिय श्याम।।
रसिकाचारज चिन्तवन, रस चाखन की मूरि।
साधन अपर अनेक जो, तिन पर डारौं धूरि।।

अग्रस्वामि के नाम जपि, हिय फूले रस वेलि।
द्वादश वन नव वाटिका, नित निरखौ रस केलि।।
अग्रस्वामि के नाम की, महिमा को सक गाय।
सीतावरहू मौन ह्वै, औरन कहा बसाय।।
नव किशोर दोउ लाड़िले, विहरत कुंज निकुंज।
अग्र नाम जप की मया, निरखहु झाँकी मंजु।।
अग्र सुधन सिय स्वामिनी, अग्र नाम रस पाय।
जापक जन पर रीझि के, वार वार वलि जायँ।।
अग्र भावती भावते, की उर में जो चाह।
रसिक मौलि मणि नाम के, नेह नेम निर्वाह।।
रंग रँगीली लाड़िली, रंग रँगीले लाल।
रंग भरी लीला लखो, अग्र चरण धरि भाल।।
उमगैं छिन छिन मिलन को, मिले रहैं दिन रैन।
नित निरखो अस युग ललन, लाय अग्र पद नैन।।
अग्रस्वामि पद कंज के, रस स्वादी जन जौन।
सिय पिय अंक दुलार को, अधिकारी है तौन।।
परमेष्टी सखि सीय की, रस उमगावन हेत।
जो इनकी शरणहि लहै, सिय पिय सेवा लेत।।

रे मन अब सब आस तजि, अग्र चरण भज लेहु।
या सम और न सुगम मग, कही रसिक जन एहु।।
विधि विस्मय दायक सुरस, अग्रस्वामि वल पाय।
अति अद्भुत गति सो लहै, जो नामावलि गाय।।
अग्रस्वामि पद-नख-प्रभा, हिय को तिमिर नसाय।
युगल चन्द मन हरन जू, 'स्नेहलतहिं' अपनाय।।
(श्री) प्रीतिलता रसमोद जू, करि दुलारकहि मोहि।
अग्र अली की कृपा ते, सिय पिय भुज भर तोहि।।
लिपटि रहे दोउ रँग भरे, कबहुँ नहीं बिलगायँ।
अग्र सेवनी नाम कहि, मुख चुम्वत हरसायँ।।

।।इति शुभम्।।

***